श्री शोभाकान्त जी,(स्व0 नागार्जुन के पुत्र) रविभूषण(सेवा निवृत्त शिरूक रॉची विवि, रॉची एवं प्रख्यात साहित्यकार प्रो0(डॉ0) रविन्द्र नाथ भगत, कुलपति विनोबा भावे विवि हजारीबाग, डॉ0संजीता वमा(नेपाल)तथा डॉ0 प्रमोदिनी हॉसदाक् का चित्र

बाबा नागार्जुन के साहित्य का वैशिष्ट्य विषय पर त्रिदिवसीय (27 से 29 मार्च 2012 तक) एग्रो टेक्नो पार्क, दुमका में अन्तररष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

गरीब–गुरबों, शोषितों–दलितों के कवि थे बाबा नागार्जुन–रविभूषण

अमरेन्द्र सुमन,दुमका (झारखण्ड)

भारतीय भाषा के किसी भी अन्य कवि में वह वैशिष्ट्य नहीं है जो नागार्जुन में है। नागार्जुन साधारण में असाधारण कवि थे।वे हिन्दी के ऐसे अकेले कवि–लेखक हैं, जिसने स्वतंत्र भारत में खुद को डिसक्लास कर लिया। मध्यमवर्गीय आकांक्षाऐं हुआ करती हैं कि उसकी हैसियत में दिन–ब–दिन बढ़ोत्तरी होती जाय, लेकिन नागार्जुन में अंत समय तक इसका पूर्ण अभाव देखा गया। रॉची विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के सेवानिवृत्त प्रोफेसर व राष्ट्रीय स्तर के साहित्यकार–स्तंभकार रवि भूषण ने **''नागार्जुन के साहित्य का वैशिष्ट्य''** विषय पर एग्रो टेक्नों पार्क में सिदो कान्हु मुर्मू विश्वविद्यालय, दुमका के तत्वावधान में स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग द्वारा (यूजीसी संपोषित) 27 से 29 मार्च 2012 तक आयोजित त्रिदिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में बीज वक्ता के रुप में उपरोक्त बातें कहीं। इस अवसर पर रविभूषण ने कहा, सिर्फ हिन्दी विभाग द्वारा ही नागार्जुन पर इस तरह के संगोष्ठी के आयोजन की आवश्यकता नहीं बल्कि इतिहास, राजनीति व पर्यावरण विभाग द्वारा भी इस तरह के आजोजन की जरुरत है, ताकि नागार्जन के संपूर्ण व्यक्तित्व की झलक प्राप्त हो सके। रवि भूषण ने कहा दक्षिण के कामराज लिंगसिंघम से लेकर उत्तर भारत की फूलन व अन्य तक के उपर सिर्फ व सिर्फ नागार्जुन ने ही कविताऐं लिखी। नागार्जुन ने दलित,गरीब–गुरुबों व शोषितों के साथ–साथ ऐसे लोगों व व्यवस्थाओं पर भी कविताऐं लिखी जो एक जनपपक्षीय कवि की विशिष्टता को दर्शाता है। किसकी है जनवरी, किसका अगस्त है, कौन यहॉ सुखी है कौन वहॉ मस्त है, जैसी कविताओं के माध्यम से उन्होनें व्यवस्था पर जो चोट किया वह अतुलनीय है। श्री रविभूषण ने कहा ब्रेटनउड्स में वर्ष 1944 में हुई बैठक में भारत ने भी हिस्सा लिया था। इसी के आसपास भारत के उद्योगपतियों ने भी बॉम्बे प्लान बनाया था। वर्ष 1948 में पुस्तक लाल भवानी की रचना उन्होनें की थी। रविभूषण ने कहा आज के समय में ग्लोबल होने का ढोंग करते हैं लोग। नागार्जुन की तरह कवियों को गरीबों तक जाना चाहिए। यह सत्य है कि राहुल सांस्कृतायन और नागार्जुन दोनों ही घुमक्कड़ स्वभाव के थे लेकिन दोनों में काफी फर्क था। स्वतंत्र भारत के सबसे बड़े पिपुल और पॉलिटिकल कवि माने जाते हैं नागार्जुन। उन्होनें साफ–साफ अपनी कविताओं में कहा है कि मैं जनकवि हूँ,क्या इस तरह ठोंक–बजाकर किसी में यह कहने की हिम्मत है कि मैं जनकवि हूँ। बलचनवा, बरुण के बेटे, पारो, तमाम तरह की रचनाओं में सामंतवाद के विरुद्ध कवि को खड़ा देखा गया। ''अब तो बंद करो हे देवी'' की रचना उन्होनें उस वक्त की थी जब लोग व्यवस्था के विरुद्ध लिखने की हिम्मत तक नहीं करते थे, इसलिये नागार्जुन को एक अरब आबादी का कवि अगर कहा जाय तो कोई गलत नहीं होगा। नागार्जुन के सबसे बड़े पुत्र श्री शोभाकान्त जी ने नागार्जुन के संग बिताए अपने जन्म से लेकर उनकी मृत्यु तक बारीकियो से अवगत कराया। इस संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता विवि के कुलपति डॉ0 एम0 बशीर अहमद खान ने किया। मात्र साल भर में ही सिदो कान्हु मूर्मू विवि, दुमका को राष्ट्रीय फलक पर पहचान दिलाने वाले वर्तमान कुलपति ने कहा इस तरह के आयोजन की आवश्यकता इस विवि को थी। विवि का यह प्रयास रहेगा कि इस तरह के आयोजन समय–समय पर होते रहें ताकि हिन्दी का विकास उत्तरोत्तर होता रहे। मुख्य अतिथि के रुप में मौजूद थे बिनोवा भावे विश्वविद्यालय (हजारीबाग) के कुलपति प्रो0 (डॉ0) रवीन्द्र नाथ भगत। उन्होनें कहा यह अच्छा अवसर है कि बाबा नागार्जुन के बहाने ही सही हिन्दी विभाग ने इस तरह की संगोष्ठी का आयोजन कर एक बड़ा कार्य किया है।

नागार्जुन इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरो में दर्ज हैं। जिन शोषितों–दलितों व उपेक्षितों के विषय में उन्होनें मृत्यु पूर्व तक रचनात्मकता लड़ाई लड़ी उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है। उन्होनें व्यवस्था के किस रुप पर रचनाऐं नहीं की ? चाहे आम गरीब की बात हो, या फिर सत्ता पर बैठे लोग। तमाम लोगों पर उनकी कविताऐं उन्हें सार्वकालिक बनाती है। उनकी रचनाओं पर लंबे समय से भारत के विभिन्न राज्यों में शोधार्थियों द्वारा शोधकार्य किये जा रहे हैं । **नेपाल के प्रज्ञा प्रतिष्ठान की हिन्दी की व्याख्याता डॉ0 संजीता वर्मा ''संयोग''ने उपरोक्त बातें कहीं।** उन्होनें कहा भारत सहित नेपाल तथा विश्व के उन सभी देशों में नागार्जुन पर शोध कार्य लगातार जारी हैं जहॉ हिन्दी की पढ़ाई की व्यवस्था है। नेपाल से आमंत्रित प्रोफेसर व प्रख्यात साहित्यकार डॉ0 संजीता वर्मा''संयोग'' ने सिदो कान्हु मुर्मू विवि दुमका के तत्वावधान में आयोजित नागार्जुन के वैशिष्ट्य विषय पर एग्रो टेक्नों पार्क दुमका में त्रिदिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में अपने व्याख्यान में नागार्जुन को हिन्दी साहित्य का सार्वकालिक धरोहर बतलाया। इस तरह की संगोष्ठी के आयोजन पर विवि को धन्यवाद भी उन्होनें दिया।

बाबूजी के विषय में कुछ भी कहना बड़ा मुश्किल भरा कार्य है। उनके जीवन के दुर्लभ पहलुओ का स्मरण आते ही हम उस कवि तक पहुँच जाते हैं जो एक दलित से लेकर बड़े–बड़े हुक्मरानों पर टिका–टिप्पणी करने से हिचकते नहीं थे। मैंने बाबूजी की रचनाओ ंको वर्ष 1980 से पढ़ना प्रारम्भ किया था। साहित्य का छात्र कभी रहा नहीं जो पूरी तरह चाव से उनकी रचनाओं को पढ़ता। बाद की अवधि में उनकी रचनाओं का संग्रह करना मैंने प्रारंभ किया। बटेशर नाथ के गॉवकी जिस मिट्टी पर मारपीट हुई उसी मिट्टी पर नागार्जुन का शत वार्षिकी समारोह मनाया गया हालिया दिनों में। बाबूजी कभी बेफिक्र नहीं थे। जब भार कंधे पर हो तो चाल में तेजी आ जाती है वाली कहावत थी उनमें। मूलतः एक कवि थे नागार्जुन। उपन्यास लिखना उनकी बहुत बड़ी मजबूरी थी। नागार्जुन के ज्येष्ठ पुत्र शोभाकांत ने उनके साथ बिताऐ दिनों का स्मरण करते हुए कहा घर–परिवार के दायित्वों से भले ही उन्हें बहुत गहरा लगाव नहीं रहा लेकिन फिर भी उन्हें घर की फिक्र हमेशा रहती थी।

नागार्जुन की काव्यधारा पर नई धारा के संपादक डॉ0 शिवनारायण ने कहा नागार्जुन कालजयी रचनाकार थे। उनकी रचनाओं में व्यवस्था की तमाम पहलुओं पर फोकस किया गया है। डॉ0 विद्यानाथ झा ''विदित'', डॉ0 राम वरण चौधरी व अन्य ने भी इस अवसर पर नागार्जुन की साहित्य रचना पर अपने–अपने विचार व्यक्त किये। नागार्जुन के साहित्य वैशिष्ट्य विषय पर विभिन्न महाविद्यालयों के आमंत्रित वक्ताओं ने भी अपने–अपने विचार रखे। स्नातकोत्तर विभाग, एसकेएमयू, दुमका डॉ0 प्रमोदिनी हॉसदाक् ने अपने वक्तव्यों में कहा कवि, कथाकार, यायावर, चित्रकार, पत्रकार, अक्खड़–फक्कड़, समाज चितेरे, बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी वैद्यनाथ मिश्र परंपरा और आधुनिक विचार के संवाहक थे बाबा नागार्जुन। महापंडित राहुल सांकृत्यायन के अंतेवासी, अनेक भाषाविद्, सिंहल–तिब्बत प्रवासी, नागार्जुन नानाविधान से हिन्दी में विख्यात कवि, उपन्यासकार, व्यंगकार, यात्री नाम से मैथिली साहित्य की श्रीवृद्धि करके साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता, वामपंथी विचार से प्रेरित, सामाजिक कार्यकर्ता थे बाबा नागार्जुन। नागार्जुन पर अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन में हिन्दी विभाग के वरीय शिक्षक डॉ0 विनय कुमार सिंहा, डॉ0 खिरोधर प्र0यादव, डॉ0 अमरेन्द्र कुमार सिंहा, डॉ0 मेरी हॉसदा, सहित अन्य शिक्षकों व प्रशासनिक पदाधिकारियों ने सहयोग किया।